

॥१॥ मगपञ्चानो नमस्त्रकरकसनीबाटा ॥
॥२॥ लांग स्याजैरथी उहं पसंग गङ्गात्मा ॥
॥३॥ वरलक्ष्मी सप्तसानकी शरीरी कायभ ॥
॥४॥ बनाया हते रागण प्राणं इमस्तकं ॥
॥५॥ खोचेदुखुत्तागवं तरीजाहा वेजफूठ ॥
॥६॥ फीरछाना आगर स्त्रीकंशरीरी कंप ॥
॥७॥ सलानरीजानाथ फुलेवारा धेतर ॥
॥८॥ अस्त्रीकाछ तेदुखुत्त गंगीतरजाण ॥
॥९॥ वेजे फुलग मीरकी दैनपकंषरदुख ॥
॥१०॥ नगलतरजाझणा वेजे भासाचठको ॥
॥११॥ ज्योंगशरीरकी मध्ये दुखतनसलेतर ॥
॥१२॥ ज्ञाणावेकोयज्यावीवज्यस्त्रीवीलंग ॥
॥१३॥ वर्णमहेतथा करनसंततहोतनाहो ॥
॥१४॥ यवरसुछेभानबोलीतेकीया सुपा ॥
॥१५॥ गकायकराविवेसागण ॥ मगपञ्चा ॥
॥१६॥ वेष्यकमुथकलाडीन्द्रियोरावरसागीवे ॥
॥१७॥ गोहपाहनीउपायकरामा भवतीशेइ ॥

॥ वा गरु कुल को रहे यास ज्यो दौद्ध ॥ संर
॥ ईक्षा मगज को बड़ीं चाहि ता यक्के
॥ करुन वीदू छावै तीन दृष्टि वर्णा न तर रही
॥ न दृष्टि वस कापु स या ओ राधी लवी जा
॥ उनकाथा यो नीत टेवा वा ॥ यावै मुरम
॥ संग जाकी या र स पुष्प राख दृष्टि उन की
॥ यसं गवै दृष्टि उन स ती दृष्टि लक्ष्म ॥ ११
॥ अ गरु कुल है वा राघव तंग यस ज्यो शध
॥ दी गहु लक्ष्मि स चांगलो दृष्टि न दृष्टि तांको ॥
॥ वजन तीक्के तटा त खलु न दृष्टि गार
॥ शुष्क करुन काप रा वा काथा भी
॥ ज वीजे ए रखु गेली यास तो फाया थी नी
॥ त दृष्टि वीजे तीन दृष्टि वर्ण आधवा पा ची
॥ चर स दृष्टि वीजे ॥ त दृष्टि वर्ण वीनी दृष्टि

ajawale, Sal Shindwan Mandal, Phule and the
Joint Project of Shinde and Shrivardhan
Shrivardhan Library, Mumbai.

॥ स्त्री पुरुष ये कंत्र नोहि जो गपीर १५७
॥ डोहि तु ॥ आगंर भाँ फुल्ल वंर म ॥ र
॥ चठ लें सा संमौशंध ॥ पांछरीजी
॥ रेवंडा तींचा सुरदाही ये कंत्र बो
॥ रीक वरव गाक करन सरसुन
॥ चांते लात का लंबवीजे रुतुंका
॥ कीती नदी वसु स फाय ॥ १३१ जुंब
॥ यो नीते वीजे ते ॥ करन मास उत
॥ रुक्मि मग खी पुरष मोजे गभी
॥ संभंव हुआ न परम व्यर संलोनदैल
॥ अंग र फुक ॥ चंर कोउ पड़ती सांस
॥ यो पंथ सोबन वही रडाव भा संस
॥ रव बेहुला चरावर चमन थे उ
॥ न पाणी यात वे गला लो वोठायी

The Raigarh Sanskrit Dhule and its Raigarh
Digitized by srujanika@gmail.com

॥ चैपार्णी समभा गेवा कुनये
॥ त्रकरायेय तकाया जिजुनरा
॥ तुकाको सेवटी तीर्णज्ञाने
॥ तटवंग नकीडा मरहु प्रगयोग
३) ॥ घुट्ट्या वरगार्णी संपथ हुनरा
॥ तान्तु इच्छ इपर लंपाकरीत ॥ ५५
॥ यगर कुले भरभी धेतला यास
॥ योषधु गुकाव राकी सपेदु
॥ छीबा चंदा दाखा देपार्णी चंदा
॥ राचेतत्कसम भा गेव्य हुनसाल
॥ काया भीज बेवु पुर्वी चंदा सं
॥ गीतत्या अमरो करण परमेष्वर
॥ कुपेन संततौ इच्छ ॥ ५६

Digitized by Rajawade Shishupalan Mandal Library and the Yashoda Chaitanya Prasād Project

॥ अगार कुछे सरदी घेतो ठीक ॥ ३८
॥ संज्ञा षष्ठि कां प्य बेवं नांगा ॥
॥ चौमुकी चार सात फाथा नीज ॥
॥ उनी रुतु जाड़ा ठीया वरती सरे ॥
॥ द्वीवर सीपुर्वी ठीया यां प्रमाण ॥
॥ कराव संगयोग करावा ॥ परमे ॥
॥ अवरकुपन खेततीड़ा ईलु ॥ ३९
॥ आगर रथा संकाढ़ी चखो तीन ॥
॥ सला संतान डातका ठीसु संपरी ॥
॥ चीठा गंवड़ा जाणा चाला संवीला ॥
॥ ज की ॥ येकताइति कागदा वरक
॥ स्त्री वकेशं रयेककरनं टेहावं पा ॥
॥ कहु गुनचवथे दिवं भीरा इति उंज ॥

Digitized by Sambodhan Mandal, Chheda and the Yashkadevrao Chavhan
Digitized by Sambodhan Mandal, Chheda and the Yashkadevrao Chavhan
Digitized by Sambodhan Mandal, Chheda and the Yashkadevrao Chavhan

(4)
॥ व्यादिडुवंडयेक्षभरम्बाधुनु
॥ रसासीजोगद्वावा सेतलीडु
॥ इत्तरितावधारबीआयत्तां
॥ नुट्टोट्टोडुवी ॥

माश्वरजा

३१८



॥ प्रतीभे चाहे वरे साज्या आव ॥
 ॥ तोकाय निर्वाह करोल आला ॥
 ॥ १॥ सबाल औंतसी नांहता श्री
 ॥ हता संपुष्ट मासारी लणी
 ॥ इव ॥ २॥ करना पंडते जेन मा
 ॥ ग्राकरी चरका यासारी पुउ
 ॥ लेवो या ॥ ३॥ दुहे वेष्टण जो अ
 ॥ द्वीपप ॥ उभानवस्तु कल
 ॥ करने या ॥ ४॥ लजे गोगा व
 ॥ टस्वर सर्वनुती ईश्वर ॥ ५॥
 ॥ जाने निधि रवि रण कोणी

॥ ६॥

॥ ७॥ लिटका

(52)

"अजको मास्तीर सीचु छी ॥ मज
॥ चाली दुजमधी ॥ आवजतो
॥ विधी ॥ नीघेधीय-पांगली ॥

"११॥ उस्या मी भी द्वावक ॥ उंच
॥ द्वन्द्व पहरि यम ॥ रोह सेहके
॥ दुक ॥ नकाक ह संउना ॥ १२
परल द्वारा ॥ ली नाँड़ने ॥ जा
॥ अकारी भीर वे सोणा ॥ ये क
आसला तणे दुजके खेजाणा
वे ॥ १३॥ जे के न रखा तीज़का
॥ ब्रह्म आली माफ़ा ॥ भो
भगीलनि राया तिने गोड़ि
नीबड़ली ॥ ४॥ उस्या स्त्रा

(SA)

॥ चेसुखवारे ॥ सातेबाजा
॥ पान्हालोटे ॥ चेकयेकाभेटे
॥ कोणसुखतेकाये ॥ ५ ॥ लुका
॥ लगेहीबा ॥ देसीमानीम
॥ खीता ॥ नकेजातासुलने ॥ ८
॥ साकेलाविचार ॥ १५ ॥ शिला
एक ॥ तुकाराम ॥ तुकाराम
॥ पदोपदिष्ठा यापुरुषां करणाजा
॥ एमाकाविगांग येरेयेरेविसाव
॥ यांकरणादयासागरा ॥ ३ ॥ जो
॥ तुनियाकरकमला ॥ नेत्रिजल
॥ मनोनिघलुकाकरिमनोरथ ॥ ५
॥ रविजार्थविडोबा ॥ ४ ॥ १५

६६
॥ धर्मरक्षावयासादि ॥ करणोजारि
॥ जांसासी ॥ ३ ॥ वाचावोलोवेद
॥ नितीं ॥ करंसंतिकेलिते ॥ ३ ॥ नवा
॥ प्रतास्थीलिखांगि ॥ कर्मसागीते
॥ लंड ॥ ३ ॥ तुकामगोजावमयासी ॥
॥ भक्तिहृहस्ती ॥ ३ ॥ ४ ॥
॥ कोऽग्रासादिजालेश्नान ॥ तथो
॥ जनभोदिले ॥ ३ ॥ कामक्राधयो
॥ टिकुचकुवि ॥ अकेपुविच्यालि
॥ ची ॥ ३ ॥ पुजेसादिद्रव्यमागं ॥
॥ कायसांगेसिध्यासि ॥ ३ ॥ तुकाम
॥ योकेचेद्रव्य ॥ अवधाभ्रमवित्र
॥ यावा ॥ ३ ॥ ५ ॥

Jointly presented by
the Goudhara family of Dule and the Yashw
rao Chavas
Pratishis
and Umbabai

(६८)

॥ न को जातां पुसों का हिं ॥ लवला
॥ हि उसंति ॥ ३ ॥ जायवे गेपं ढर पुरा ॥
॥ लोम्सो ईरा दिनचा ॥ २ ॥ ववनाचा
॥ करिगोवा ॥ शिवोंदेवा शरण ॥ ३ ॥
॥ तुकान्नहो क्षपावंता ॥ बहुचिंता
॥ दिनचा ॥ ४ ॥ ५ ॥

॥ न महारु ॥ राम साला ॥ मोक्ष जो
॥ ए अवसरे ॥ १ ॥ न को कालवेल
॥ यस्मिं ॥ रघु के सवितीतां ॥ २ ॥
॥ सर्वसाधनाचे सारा ॥ हानि धीर
॥ वेदाचा ॥ ३ ॥ न मालणे ते चिमाता
॥ माझे संत मानिती ॥ ४ ॥ ५ ॥

(7)

॥१॥ रामनामविप्रतोंडा जे साभां
॥२॥ उद्बोलका॥३॥ कायकि जेयादे
॥४॥ इनान॥ वृथाश्चानभुंकण॥२॥
॥५॥ काययावज्ञानुष्टान॥ बकध्या
॥६॥ नवागठे॥७॥ लुकास्तपेकाळ
॥८॥ कागायस्तेजांगसापरि॥४॥९
॥१०॥ कुवंडिकनिकाया॥ वरनिपा
॥११॥ यागोङ्गीरिया॥१॥ वैसलेतरप
॥१२॥ डोळो॥ मनवाकालागठे॥२॥
॥१३॥ प्रतेनसरवेहरि॥ आवडिपुरि
॥१४॥ वैसलि॥८॥ लुकास्तपेविसाव

(7A)

॥१॥ को। तेथेथालों द्यगिवरि। धा। ७।
॥२॥ केलातेसांडिकार। माझामा
॥३॥ रचालवि। १। होउओंतरायबुझी।
॥४॥ क्षपानिधीनेयावी। २। जास्ति
॥५॥ तदिजउजिवा। केचाभावफुरता।
॥६॥ ३। अनन्यभावद्यावीशोवा।
॥७॥ जाहादेवाद्यउसि। ४। तुल्मि
॥८॥ आमीग्रणांगते। क्षपावंते
॥९॥ रह्यजं। ५। लुकामेंमाकुंकी
॥१०॥ व। जासांजीवजउजास्ति। ६।
॥११॥ लुकाराम्हास्त्क। ७। ८।
॥१२॥ जातांदेवमोक्लिके। तुल्माम
॥१३॥ लेदिसना। ९। जातांनाहीजीय

(8)

॥१॥ भावा॥ उरलाराववेगङ्गो॥ २॥ सां
 ॥२॥ माकुनिद्यावेदेवा॥ आपणास
 ॥३॥ वायावरि॥ ३॥ तुकामरणमभा
 ॥४॥ जा॥ लदिलाजस्वामिष्ठि॥ ४॥ ४॥
 ॥५॥ पसरोनीनाहिलोबाहे॥ सोईला
 ॥६॥ होतुमर्वीयो॥ ५॥ ऊंतोआवेला
 ॥७॥ गवेगो॥ पांडुरंगेधांवत॥ २॥ खे
 ॥८॥ सायाचिद्द्वाकडा॥ चालिखउ
 ॥९॥ रूपति॥ ३॥ तुकामरणक्षपाकु
 ॥१॥ वा॥ करणेसेवालागली॥ ४॥
 ॥१०॥ ४॥ मागणोत्तेयेकझा
 ॥१॥ वे॥ निरंतर्यावेजागरण॥ १॥

The Raikwade Sanskriti Mandal, Dhule and the Yashodhan
 Chavhan Prabodhan Mandal, Mumbai

॥ हरिदासाचासंगबना ॥ ज्ञावति
 ॥ नाघवागांडगीती ॥ ३ ॥ जोनालु
 ॥ उतपत्तिर्थदानी ॥ तोकीर्तनीना
 ॥ चतसे ॥ अं जनार्दनाचायेका
 ॥ अणो ॥ नीरतरयेणोजागरणा ॥
 ॥ (४) १७ ॥ नाम ॥ ५
 ॥ सावधजालासावधजालो ॥ ठरि
 ॥ व्याजालोजागरा ॥ १ ॥ तेष्येवे
 ॥ छाचाचाभारा जयजयकार
 ॥ होतजासें ॥ २ ॥ अणोनियागलि
 ॥ झाप ॥ होतेपापजाउते ॥ ३ ॥ लु
 ॥ कामणोतयातयां ॥ वच्छेष्या

Sanskrit Translated by
 Keshwantrao Chavan
 Panchavati, Mumbai

(१९)

॥१॥ छपेचि ॥४॥१३॥ २५॥
 ॥२॥ ब्रीद्याचेजगदानी ॥ तोचिम
 ॥३॥ निस्मनावा ॥१३॥ समपायकर
 ॥४॥ कटि ॥ उभातटि जिवेरस्या ॥२॥
 ॥५॥ पाहिलीयावेघवाही ॥ वैसेजी
 ॥६॥ वीजउनि ॥३॥ तुकाम्पान
 ॥७॥ कीकाजा ॥ धावेलाजालवल
 ॥८॥ हि ॥४॥१३॥ ३५।१३५॥

लागणीधर्मतिक्तीपीपाणि ॥
 लागणीधर्मतिक्तीपीपाणि ॥

(9A)

शुद्धिग्रन्थसंक्षिप्तम् २ छारीवद्वर्णालिम
छकाषारीवद्वर्णालिम न रचाइतोपयोगीपा
उयापहीनिगातान्मालकम्भण्डिगालिम
लिमपीः जिलिवामहापापिगालिम
द्विष्टन्नातीर्थमरेमरेमरेमरेमरेम
मध्याहुरेमरेमरेमरेमरेमरेमरेम
स्वपुभरीः मराशायारपूरीः गिलालिम
भद्रीज्ञग्रन्थपव्यर्थामालिम प्रभाद्विभ
तः लवभकान्नायापाद्विः इवज्ञायाम

"Joint Project of the Rajivadee Sanshodhan Vaidika Mandal, Phule College, Yashwantrao Chavhan Pratisthan Mumbai"

(१०)

र्गः गिर्मात्रुभागतर्गः लघुतिभगः ख
रथभवधरेभगः गिर्मन्त्रपरंगरीः पठ
र्गभमपरीः गिर्मात्रभपः द्यरूपाभ
स्वेष्टपः उः अद्विपद्यन्तरः भृषीभृष
उद्गरः शमनापुलगतगमः द्येष्ट
स्वाभृषीभृषः द्याद्यरात्रगाहुः भृषी
स्वरतिनाद्युः गिर्मात्रपात्रदेणः भ
कोद्युष्टमेष्टिरदणः ॥ आभमधुताधी
पयद्यरीः नदिधाप लियापरीः ॥ स



रोधस्तरणः स्तरणाः महास्तरणः मम
 सपाभीताकुरुताज्ञनगाधक
 वभरदानिष्ठः याधर्हा भवनियाः एतत्
 चाद्यरीत्वा प्रतिष्ठाप्तः वा ॥ ५३ ॥ अज्ञयाद्यस्त्रियं
 तोरीष्मलाद्याः प्रताद्येतमज्ञशालेतेष्मद्वान्
 चासः ॥ इमाणां ग्रन्थावल्यमाद्यरीत्वाकद्युर्विराम
 नाधाद्यिष्मित्वाद्येतद्विनाशति ॥ इमाणेष्मद्विर
 गुणेन्द्रियेष्माद्याद्याम् ॥ ५४ ॥ इमाणापाद्युपठ
 ईः भवताते द्युर्विरीः भारपताज्ञनभारी
 अभिभवतार्थाद्यः धर्वाद्याद्याधाद्यः द
 कर्पीपृभाद्यः लोक्यतेष्मद्विद्यः

Sanskrit Manuscript
 Project of
 Sahitya Akademi
 and the
 National
 Archives
 of India
 and
 the
 State
 Library
 and
 Archives
 of
 Odisha

(11)

अनुदर्शिताः पादीपठरीनायन
 द्वरतीनमरगजः इष्टातिन्द्राय
 रीमः १८ आद्यकालिनः उद्गामी
 जाप्तः १९ पाठ्यदर्शकान्तराल
 कांतिः अरिष्टानन्तराल
 चेत्याराक्षयाद्यव्ययादिताना
 पद्मिनरम्भारद्विपुत्रमुपायान
 मांसरीश्चाण्डीताद्यव्ययोर्तोष्ट
 रणभगवप्ता ॥ १८ ॥





मूळ प्रत पाहण्यासाठी संपर्क

इतिहासाचार्य वि.का. राजवाडे संशोधन मंडळ, धुळे
राजवाडे पथ, गल्ली नं. १, धुळे-४२४००९ (महाराष्ट्र)
दूरध्वनी क्रमांक (०२५६२) २३३८४८
Email ID : rajwademandaldhule@gmail.com